सहजानंद शास्त्रमाला

द्रव्यदृष्ट प्रकाश:

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी “सहजानन्द” महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

http://sahjanandvarnishastra.org/

द्रव्यदृष्ट प्रकाशः

लेखक :—
पू० श्री मनोहर जी वर्णी
सहजानंद महाराज

प्रकाशक:—खेमचंद जैन, मंत्री श्री सहजानंद शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ

प्रति १०००
सन् १९८०

मूल्य : ७५ पैसे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

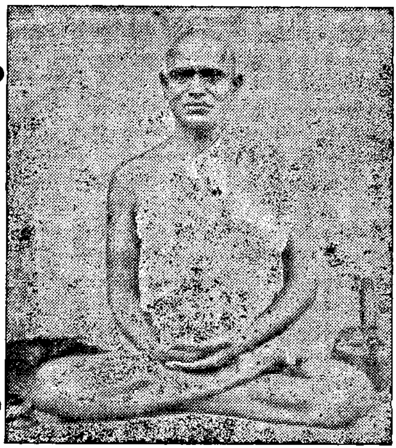

पू० श्री मनोहर जी वर्णी

सहजानन्द महाराज

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

प्रकाशकीय

द्रव्य अर्थात् जो कुछ है उस पदार्थकी सही-सही जानकारी शान्ति, धीरता निराकुलताको सम्पन्न करती हुई शाश्वत आनन्दधाममें पहुंचा देती है। अतः प्रत्येक मुमुक्षुका कर्तव्य है कि द्रव्यकी अनेक विधिसे जानकारी करें।

प्रस्तुत पुस्तकमें द्रव्य शब्दकी निरुक्ति कर-करके तथा संकेतको स्पष्ट कर-करके द्रव्यका स्वरूप स्पष्ट किया है। यद्यपि किन्हीं लक्षणोंमें द्रव्यके एक-एक अंशका भी वर्णन है तो भी उस अंशकी जानकारीसे विस्तारमें आकर द्रव्यके पूर्ण स्वरूप की झलक करनी चाहिये। ऐसे स्याद्वादका जो आश्रय नहीं करते हैं वे एकान्तवादी दार्शनिक हो जाते हैं।

द्रव्यदृष्टप्रकाशमें जिस ज्ञानकलासे रचयिताने द्रव्यस्वरूप का रूपण किया है उस ज्ञानकलाकी दृष्टि रखकर अध्ययन करनेसे जो ज्ञानप्रकाश मिलता है उससे एक मार्गदर्शन मिलेगा।

द्रव्यस्वरूपके विवरणसे यह शिक्षा मिलेगी कि प्रत्येक पदार्थ अपने स्वरूपसे ही शाश्वत है, अपने स्वरूपसे ही परिणमता है, अपने आप स्वयं निरपेक्ष शुद्ध है, जिसमें विभाव शक्ति है और अशुद्ध उपादान है, वह अनुकूल परउपाधिका सन्निधान पाकर स्वयं अपनी योग्यतासे विभावरूप परिणमता है। इन सब विज्ञानोंसे औपाधिक विकारसे उपेक्षा होकर स्वभावमें उपयुक्त होनेकी शिक्षा मिलती है। * * *

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

द्रव्यदृष्टि प्रकाश

प्रवक्ता—
अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्त-न्याय-साहित्यशास्त्री
पू० श्री मनोहर जी वर्णी
सहजानन्द महाराज

सम्पादक—
पवन कुमार जैन ज्वैलर्स, सदर मेरठ

प्रकाशक—
खेमचंद जैन सर्राफ
मंत्री श्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ

द्वितीय संस्करण : १०००
सन् १९८०

लागत : ७५ पैसे

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

द्रव्यदृष्टि प्रकाशः

प्रवक्ता—
अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री
पू० श्री मनोहर जी वर्णी
सहजानन्द महाराज

बन्दै बन्दै विहितसुगतिद्रव्यमन्वेष ज्ञाता,
लक्ष्यै लक्ष्यै विरतमनसा द्रव्यसामान्यभाव: ।
पुष्पै पुष्पै विमलसहजानन्दसिद्धो मयाऽहं,
दृश्यै दृश्यै विविधसुनयैर्द्रव्यदृष्टप्रकाश: ।।

जगतमें जो भी परिणमता है, अनुभवमें आता है, इंद्रिय के निमित्तसे या मनके निमित्त अथवा स्वयं जो ज्ञात होता है आदि आदि वह सब द्रव्य है, द्रव्योंकी ही दशायें हैं । केवल भ्रम कुछ नहीं है । अस्तित्वसे रहित नही है । इन द्रव्योंका बोध कितने ही नये अभिप्रायोंसे होता है, क्योंकि द्रव्य अनेक धर्मात्मक है इस द्रव्यतत्त्वके यथार्थ बोधके बिना जीव सुखके उपायमें नहीं पहुंच पाता । यद्यपि ज्ञानके विविध प्रयासके बिना भी कोई भव्य निजद्रव्यका अनुभव करने वाला हो लेता है तथापि वहाँ भी सामान्यतया स्व-पर द्रव्योंका बोध हुआ ही है ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

संक्षेपतः द्रव्यकी असाधारणता यह है कि प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है और स्वयं स्वयंकी ही परिणतिसे परिणमता है इस ही द्रव्य स्वरूपको किंचित् विस्तारसे वर्णन करनेका कुछ उपयोग हो रहा है वह भी मुख्यतया अन्य अशुभोपयोगोंसे वचन के लिये।

विस्तृत वर्णनके प्रवेशके लिये साधारणतया यह ज्ञप्ति आवश्यक है कि पदार्थ प्रत्येक अखंड एक होता है और वह अनन्त शक्ति वाला है एवं प्रतिसमय परिणमता रहता है यहाँ जो परिणमन है वह पर्याय शब्दसे प्रसिद्ध है और सर्वगुण एवं पर्यायोंका अभेदपिण्ड वह द्रव्य शब्दसे प्रसिद्ध है।

लक्ष्य लक्षण अभिन्न होनेके कारण कभी-कभी किसी दृष्टि से अभेद स्वभावसे भी वही अभेदस्वभाव लक्षित हो जाता है वहाँ उपायभूत तो लक्षण बन जाता है।

यह विशेषतया ध्यानमें बात रखनी चाहिये कि आगे आगे जो द्रव्यकी तारीफ होगी उस वर्णनमें बहुतसे निरूपण अव्याप्त हैं सब द्रव्योंमें नहीं जाते है तथापि उनसे इतना ही तात्पर्य लेना कि अमुक विशेष द्रव्यको इस संगतिमें अपनी किस विशेषतासे ग्रहण किया है।

जिन संगतियोंके ऊपर पूज्यपाद श्रीमदुमास्वामी विरचित "गुणपर्ययवद्द्रव्यम्" सूत्र है उन संगतियोंमें अनेक संगतियाँ सूत्रके शब्दोंके भावोंके अनुरूप है तथा जो सूत्र लिखे बिना

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

सं.तियाँ हैं उनमें भी सूत्रके कतिपय संगतियाँ यद्यपि शब्दों को व्यापक नहीं है पुनरपि किसी नयसे वस्तुसे किसी देशको बतानेमें समर्थ है।

बहुतसे एक-एक देश विज्ञात होनेपर पूर्ण वस्तुके समझने में कभी सुगमता होती है।

अतएव इन संगतियोंका उपयोग द्रव्यमें देखे गये किसी प्रकाशका विकास करना मात्र है।

नोट—उक्त मंगचालरणमें कर्ता भी मैं हूं और कर्म भी मैं हूं और शेष कर्म विशेषण है। नयोंके द्वारा अर्थ प्रकाशित हो जाता है।

गुण पर्ययवद् द्रव्यम्

संगति—गुणपर्यायाधारो द्रव्यम्

भावार्थ—गुण और पर्यायोंका जो आधारभूत है वह द्रव्य है अर्थात् द्रव्यमें ही गुण है और पर्यायें हैं। जो द्रव्य है वह गुण नहीं व पर्याय नहीं जो गुण है वह पर्याय नहीं, द्रव्य नहीं। जो पर्याय है वह द्रव्य नहीं, गुण नहीं। क्यों ? सबका अभिप्राय पृथक् है। गुण तो एक त्रैकालिक शक्तिका नाम है, पर्याय क्षणवर्ती अवस्थाका नाम है। गुणपर्यायोंका समूह या आधार या एकत्व मूलभूत वस्तु द्रव्य है। अथवा द्रव्य अर्थात् कोई चीज है उसका प्रतिक्षण परिणमन पर्याय है, जो-जो परिणमन है वह एक सीमाको लेकर है। जो जातिगत रहते

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

हैं उनकी शक्तिको गुण कहते हैं, इस प्रकार एक द्रव्यमें गुण पर्याय होते है, अतः यह युक्त ही है कि गुण पर्यायका आधारभूत द्रव्य है।

संगति—यदाश्रयीकृत्य गुणानां पर्यायो वर्तना भवति तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जिसको आश्रय करके निमित्त मात्र करके गुणोंका पर्याय अर्थात् वर्तन होता है वह द्रव्य है। इस लक्षणने अपना लक्ष्य कालद्रव्य पर रखा है। कालद्रव्यको निमित्त मात्र करके सर्व गुणोंकी वर्तना होती है अथवा जिस उपादानको आश्रय करके गुणोंकी परिणतियां होती हैं वह द्रव्य है, इस लक्षणसे सभी द्रव्य लक्षित हो गये। इसमें यह सिद्धान्त भी आ गया कि प्रत्येक पर्यायें अपने द्रव्यसे ही उठती हैं किसी अन्य निमित्त आदिसे नहीं। प्रत्येक पदार्थ अपने एक स्वभाव रूप है उसको उपादान करके जो परिणमन होता है वह पर्याय है।

संगति—गुणेन पर्याया भवंति यस्य तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—गुणसे, स्वभावसे, स्वचतुष्टयसे जिसकी पर्यायें होती हैं वह द्रव्य है। जैसे आत्माका जो भी परिणमन है वह आत्माके चतुष्टयकी परिणतिसे होता है अन्य किसी गुणके चतुष्टयसे, पर्यायसे नहीं होता। अतः जिसके गुणके स्वभावसे चतुष्टयसे पर्यायें होती हैं वह द्रव्य है। परिणमन गुणोंका

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

होता है यह तो भावपरिणमन है जो परिणमन है वह काल परिणमन है। उन प्रदेशोंसे भिन्न नहीं, समस्त गुणोंका स्वयं प्रदेशक्षेत्र है, अतः गुणपरिणमनमें क्षेत्रपरिणमन भी है। समस्त गुणोंका समुदाय द्रव्य है सो गुणोंके परिणमनमें द्रव्यका परिणमन सिद्ध है, यह द्रव्य परिणमन हुआ। प्रत्येक पदार्थ अपने स्वभावसे परिणमते हैं, परके स्वभावसे नहीं। जिसके स्वभावसे पर्याय उठें वह द्रव्य है। इस लक्षणसे सभी द्रव्य लक्षित हुये।

संगति—गुणाः पर्यायेन भेदमात्रेण संति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—द्रव्य एक अखंड पदार्थ है उसे जब भेददृष्टिसे प्रतिबोधनके लिये विशेषतायें बताकर वर्णन करते हैं तब वहाँ गुण है ऐसा उपयोग ग्रहण कराता है, अतः "पर्यायसे भेददृष्टि से जहाँ गुण प्रतीत होते हैं वह द्रव्य है" यह लक्षण अखंड द्रव्योंको सन्तुलित करता है। द्रव्य तो अवक्तव्य किन्तु ज्ञातव्य मात्र है उसको समझानेके लिये जो कुछ कहा जावेगा वह द्रव्य की विशेषता मात्र बताई जावेगी। वस्तुतः द्रव्य अखण्ड एक सत् है।

संगति—गुणाय स्वरूपाय पर्यायाः संति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहाँ गुण अर्थात् स्वरूपका अस्तित्व रखनेके लिये पर्यायें हैं वह द्रव्य है। इस लक्षणसे यह सिद्धान्त पुष्ट किया है कि यदि परिणमन पर्याय न मानी जाय, न हों तो

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

द्रव्य कुछ भी वस्तु नहीं ठहरती है कभी त्रिकालमें ऐसा हो ही नहीं सकता कि परिणमें ही नहीं और सत् कोई वस्तु रहे। अतः जहाँ पर्यायें (उत्पाद व्यय) स्वरूप (ध्रौव्य) के लिये होती है वह द्रव्य है। इसमें यह सिद्धान्त भी आ गया कि उत्पाद व्यय बिना ध्रौव्य ठहर हो नहीं सकता। वस्तु ध्रुव तभी होती है जब कि उसमें नई-नई दशायें होती जावें।

संगति—गुणात् पर्यायाः सन्ति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—गुणसे आविर्भूत होकर पर्यायें हैं जहाँ वह द्रव्य है पर्यायोंका उद्गम स्थान शक्ति ही है। इस लक्षणने इस सिद्धान्तको पुष्ट किया कि पर्यायें किसी अन्य द्रव्य, गुणसे नहीं आती स्वगुणकी ही दशा होनेसें स्वगुणसे ही आविर्भूत होती है। यहाँ गुणत् शब्द पञ्चम्यन्त है। जिससे यह प्रसिद्ध होता है कि गुण तो एक स्वभावरूप अनादि अनन्त है उससे पर्याय एक समयको उठती है और दूसरे समयमें नष्ट हो जाती है। इस लक्षणने सब द्रव्यको लक्षित किया।

संगति—गुणानां पर्यायैर्णवपर्याभययावन्तियत्रतद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जैसे कि द्रव्य है उसको विशेष दृष्टि दें तो शक्तियाँ प्रतीत होती हैं। इसी तरह गुण भी एक त्रैकालिक शक्ति है उसको विशेष दृष्टि दें तो कालानपेक्षित पर्यायें हैं, इस तरह गुणोंके पर्याय भेददृष्टि पर्यायदृष्टिसे जहाँ हैं वह द्रव्य कहलाता है यह लक्षण गुणसत्त्वपर ही मुख्यतया होकर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

पर्यायोंको गौणतया स्वीकार करके द्रव्यको लक्षित करता है। भेददृष्टिसे ही जहाँ गुणोंकी पर्यायें होती हैं वह द्रव्य है। इस लक्षणने भी सभी द्रव्यको लक्षित किया।

संगति—यथोत्तरं गुणिताः भाविनः पर्यायाः संति यस्य तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—यथोत्तर काल गुणित भावी पर्यायें जिसकी हैं वह द्रव्य है, इस लक्षणसे उपयोगको इस सिद्धान्तपर पहुंचाया गया कि यद्यपि भूत पर्यायें भी अनादिकालसे हैं तथापि जो भी अनन्त पर्यायें हो गईं उससे अनन्त गुणित पर्यायें द्रव्यको होती रहेंगी। यहाँ भावी पर्यायोंकी अनन्तता व्यक्त की गई है ऐसी पर्यायें जिस एकको होती हैं वह द्रव्य है। ऐसे सभी द्रव्य हैं।

संगति—गुणस्य परि उपरि अयाः संति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—गुण अर्थात् स्वभावके ऊपर पर्यायें जहाँ होती है वह द्रव्य है, इस लक्षणमें सामान्य विशेषके लक्षणोंके रहस्य को प्रगट किया है पर्यायें सामान्यके साथ तादात्म्य नहीं रखती क्योंकि सामान्य स्वभाव त्रैकालिक एक रूप है, पर्याये क्षणवर्ती नानारूप हैं। वे सब पर्यायें चाहे स्वाभाविक हों या वैभाविक हों स्वभावके ऊपर प्रवेश करके प्रकट होकर परिणमती है अर्थात् पर्यायें स्वभावके ऊपर तैरती हैं। इससे यह सिद्धान्त भी आया कि द्रव्य पर्याय मात्र नहीं है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

संगति—गुणाः परितः श्रयन्ते गच्छन्ति यस्य तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जिसके प्रति प्रदेशमें चारों ओरसे वे ही गुण पाये जावें वह द्रव्य है, इस लक्षणसे यह सिद्धान्त प्रकट किया गया है कि एक द्रव्य चाहे असंख्यात प्रदेश विस्तीर्ण हो तथापि वहाँ गुण सर्वत्र वही एक है। यह द्रव्यकी अपूर्व शक्ति है। जैसे आत्मामें ज्ञान दर्शन चारित्र सुख शक्ति श्रद्धा आदि अनेक गुण है सो आत्माके किसी एक प्रदेशमें है, इसी तरह वही दर्शन, वही चारित्र, वही सुख आदि सब प्रदेशोंमें है तथा जो प्रदेश ज्ञानरूप है वही सर्वगुण रूप है। यही व्यवस्था सब द्रव्योंकी है।

संगति—गुणयिताः आमंत्रिताः पर्यायाः सन्ति यद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—पर्यायोंका स्वरूप स्थायी गृह नहीं है। अतः वे पर्यायें उस समयकी योग्यताके कारण बुलाई हुईकी तरह होती हैं सो जब तक योग्यता व कारण-कलाप अनुकूल रहते तब तक स्थूलदृष्टिसे पर्यायें आमंत्रित हैं ऐसी पर्यायें जहाँ होती हैं वह द्रव्य है। पर्यायें बिल्कुल नई-नई आती हैं, कहीं ऐसा नहीं है कि द्रव्य स्वरूपमें सभी पर्यायें अन्तरमें उपस्थित हैं और उनका आविर्भाव होता जाता है। अंतमें उपस्थित है और उनका आविर्भाव होता जाता है, किन्तु अन्तर्योग्यता व बाह्यकारणकलापका उपादान व निमित्त पाकर पर्यायें उत्पन्न होती हैं। इसको आविर्भाव इसलिए कहते हैं कि पर्याय किसी

Version 1

 http://sahjanandvarnishastra.org/

अन्य द्रव्यसे नहीं पाती, स्वयंमें प्रकट होती है।

संगति—गुणानां गुणैः पर्यायापेक्षया पर्यायाः भेदाः संति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—गुणोंका गुणोंके साथ पर्यायभेददृष्टिसे जहां पर्याय अर्थात् भेद है वह द्रव्य है यद्यपि द्रव्यमें अनन्त शक्तियाँ अभेद स्वभावसें हैं तथापि उनके स्वलक्षणसे देखा जावे तो सबका स्वलक्षण भिन्न-भिन्न है। जैसे आत्मा ज्ञान दर्शन सुख शक्ति आदि अमित गुणोंका पिण्ड है इस आत्मामें जो ज्ञानस्वभाव है वह ज्ञानस्वभाव ही है दर्शन आदिरूप नहीं है। इसी तरह जो दर्शन है वह दर्शन ही है सुख आदि नहीं। यही व्यवस्था सभी गुणोंकी है यहां अन्य द्रव्यके गुणोंका नास्तित्व तो सुतरां सिद्ध है ऐसी व्यवस्था जहाँ हो वह द्रव्य है।

संगति—गुणेषु पर्यायाः अभेदेन संति यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहां पर्यायें गुणोंमें अभेदरूपसे है वह द्रव्य है, इस लक्षणसे यह प्रकट हुआ है कि पदार्थोंका मूल्य गुणोंसे पृथक् कहीं नहीं पाये जाते एवं पदार्थोंका उद्गम गुणसे है, किसी अन्य द्रव्यके गुणोंसे नहीं अथवा पर्यायें गुण परिणतिके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं, इसलिए पदार्थोंका गुणोंमें ही अंतर्भाव है ऐसा जहाँ होता है वह द्रव्य है। इसमें यह सिद्धान्त भी आया कि गुण जिस कालमें जिस पदार्थ रूप परिणमता है वह इस कालमें तन्मय है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

संगति—गुणाः पर्यायेण कल्पनामात्रेण संति यत्र तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहाँ गुण कल्पनामात्रसे है वह द्रव्य है । द्रव्य एक स्वतंत्र पदार्थ होता है जो कभी न अन्यरूप हुआ और न कभी अन्य द्रव्यरूप हो सकेगा वह द्रव्य द्रव्य है वह परिणमता रहता है उसको पहिचान करनेके लिये उसके परिणमनोंको विशेषता देखकर एवं गुणोंके द्वारा बोध कराया जाता है, क्योंकि गुण इन शक्तियोंकी कल्पनाके अतिरिक्त द्रव्यके स्वलक्षण को जाननेका अन्य उपाय नहीं । यहाँ यह कल्पना ऐसी न समझें कि कुछ बात हो न हो और कल्पना कर ली जावे, किन्तु कल्पना इसलिए है कि वस्तुभूत स्वतंत्रसत् नहीं है और अखण्ड एक वस्तुमें अंश जो कि अनुरूप है, विचारते गये हैं ।

संगति—गुणाः पर्यंयन्ते हीनाधिकरूपेण दृश्यन्ते यत्र तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहाँ गुण हीनाधिक रूपसे षट्गुण हानि वृद्धि रूपसे भी देखे जावें वह द्रव्य है । द्रव्य तो अखण्ड एक स्वतंत्र स्वयंसिद्ध वस्तु है । उसे कभी हम जैसे अस्तित्व वस्तुत्व एकत्व अगुरुलघुत्व, प्रमेयत्व प्रदेशवत्व इन छह गुणोंसे देखते हैं तो कभी अन्य विशेष गुणोंके साथ अधिक रूपसे देखते हैं तो कभी इसके विपरीत क्रमसे हानि रूपमें कर गुण वालेके रूप में देखते हैं । ऐसा होते हुए भी जो एक अखण्ड एवं उन सब विशेषोंका आधारभूत है वह द्रव्य है ।

Version 1

संगति—गुणानां पर्यायः संतति यत्र तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहाँ गुणोंकी संतति चलती रहे वह द्रव्य है। गुण द्रव्यमें द्रव्य रूपसे रहते हैं गुण जिसे त्रिकालमें नहीं छोड़ सकते वह द्रव्य है। वस्तु मूल द्रव्य गुणोंका अभेदपिण्ड है। जैसे रूप इससे पृथक् नहीं हो सकता रस आदि भी इसी तरह हैं उन सब गुणोंका अभेदपिण्ड द्रव्य है। द्रव्यमें ये सभी गुण तादात्म्य रखते हुए अनन्तानन्त काल तक (अविनाशी द्रव्यके अस्तित्व तक) रहते ही हैं।

संगति—केचिद्गुणाः पर्याया इव अपि भवन्ति यत्र तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—कोई कोई गुण पर्यायोंकी तरह भी होते हैं जहाँ पर वह द्रव्य है। जैसे किसी द्रव्यके विवक्षित पर्यायसे परिणत होनेकी शक्ति जिसे भव्यत्व शक्ति कहते हैं परिणत हो लेनेसे वहाँ वह गुण विनष्ट हो जाता है। तब इस लक्षण से इस सिद्धान्तका एकरूप प्रगट हुआ कि कुछ शक्तियाँ कभी आती हैं और कुछ कालके बाद समाप्त हो जाती हैं, ऐसा होने पर भी वे शक्तियाँ पर्याय नाम नहीं पातीं, क्योंकि वे किसी अन्य शक्तिके परिणमन नहीं हैं।

संगति—गुणा इव केचित्पर्यायाः सन्ति यत्र तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—कोई-कोई पर्यायें जहाँ गुणोंकी तरह हों वह द्रव्य है। कालद्रव्यकी पर्याय वर्तना है और वही एकमात्र

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

लक्षण है, गुण है वह सदैव रहता है अथवा कितनी ही पर्यायें स्थूल परम्परासे वहींकी वहीं रहती हैं अर्थात् गुणकी तरह स्थायी रहती है यह व्यवस्था जहाँ रहती है वह द्रव्य है।

संगति—गुणाः पर्यायेष्वन्वयिने यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहाँ पर्यायोंमें गुण अन्वयी बने रहें वह द्रव्य है, जैसे गुणोंमें तिर्यक् रूपसे अन्वयी द्रव्य है वैसे ही पर्यायोंमें ऊर्ध्वता रूपसे अन्वयी गुण है। पर्यायें व्यतिरेकी हैं, परन्तु उन सभी पर्यायोंमें गुण वही है।

संगति—गुणेषु पर्यायेष्वन्वयि द्रव्यम्।

भावार्थ—जो गुणोंमें और पर्यायोंमें अन्वयी होता है वह द्रव्य है। द्रव्य सदा सर्वत्र रहता है वह गुणोंसे पृथक् अथवा पर्यायोंसे पृथक् रहकर अपना अस्तित्व नहीं पा सकता। इस लक्षणसे यह भी प्रगट है कि गुणों और पर्यायोंका पूर्व अधिकारी एक स्वयं द्रव्य है, क्योंकि अन्य द्रव्यका उनमें अन्वय नहीं होता।

संगति—गुणपर्यायैरुपायैर्ज्ञातोऽभेदस्वभावोऽर्थो द्रव्यम्।

भावार्थ—गुण और पर्याय रूप उपायोंसे जाना गया अभेदस्वभाव पदार्थ द्रव्य है। द्रव्य तो अखण्ड प्रतिक्षण परिणमनशील एक स्वतंत्र सहज सिद्ध पदार्थ है उसकी विशेषता जो हमारे क्षायोपशमिक उपयोगसे गृहीत हुई है वे कोई तिर्यक् स्वरूप हैं और कोई ऊर्ध्वता स्वरूप है वही गुण और पर्यायें

Version 1

हैं उन उपायोंसे ज्ञात हुआ है अभेदस्वभावी वह अखण्ड पदार्थ द्रव्य है।

संगति—गुण्यन्ते वध्यन्ते पर्याया यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहां पर्यायें सम्बंधित होती हैं वह द्रव्य है किसी भी द्रव्यको अथवा द्रव्योंका पृथकताको जाननेका उपाय यह ही है कि विवक्षित पर्यायोंका जहाँ अभेद सम्बंध निकले वह द्रव्य है। एक ही क्षेत्रमें जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, कालमें छोटे द्रव्य पाये जाते हैं। वे सब इतने द्रव्य क्यों हैं ? उसका भी यही कारण है कि जिस स्वरूपमें पृथक् पृथक् विशेषतावोंका उस समय अभेद सम्बन्ध मिलता है वह वह द्रव्य है।

संगति—एकमनेकात्मकं द्रव्यम्।

भावार्थ—गुण पर्याय स्वरूपीको द्रव्य कहा है प्रत्येक पदार्थमें मुख्य कोई विशेषता होती है जैसे आत्मामें चैतन्य, पुद्गलमें मूर्तत्व सो यह गुण है, अब चैतन्यको विस्तारपूर्वक देखो तो वहाँ अनेक शक्तियां हैं और मूर्तत्वमें अनेक विशेषतायें हैं जिन्हें ज्ञान दर्शन सुख शक्ति तथा रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि शब्दोंसे कहते हैं। इस तरह अनेकात्मक अनेक रूप होकर भी जो एक है वह द्रव्य है अथवा किसी भी द्रव्यमें अनन्त गुण होते हैं उनमें प्रत्येक गुण अनन्तानन्त पर्यायमें रहता है जिससे उसे एक कहते हैं और पर्यायें सर्व विविध हैं,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

विभिन्न हैं, अतः पर्यायें अनेक हैं, इस प्रकार एक अनेकात्मक सर्व धर्मोंके अभेदस्वभाव रूप अखण्ड पिण्डको द्रव्य कहते हैं

संगति—गुणा एव पर्यायाः सन्ति यस्मिन् तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहां गुण ही पर्यायें हो वह द्रव्य है । इस दृष्टि से मुख्यतया धर्म, अधर्म, आकाशको लक्षित किया है, सूक्ष्म दृष्टिसे इसके भी परिणमन प्रतिक्षण होते रहते हैं, परन्तु वह ऐसे हैं जिनको कोई स्पष्ट नहीं किया जा सकता वे अगुरुल गुणके परिणमन रूप हैं । वहां उन पर्यायोंका गुणोंमें अन्तर्ध्या है अथवा वहां गुण ही पर्याय बन रहे हैं । शुद्ध गुण होते तो कुछ पर्याय भी है दोनोंका एक समन्वय है जिससे य सिद्ध होता है कि जहां गुण ही पर्यायें हों वह द्रव्य है । अथव पर्यायें गुणकी प्रतिक्षण वर्तनाके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं सो दशाओंमें भी जिसकी व्यक्तियां हैं उसपर लक्ष्य मुख्यत पहुंचता है । वहां यही प्रतिभास होता है कि जहां गुण पर्याय है वह द्रव्य है, इस दृष्टिसे यह सब ही द्रव्योंका लक्ष हुआ ।

संगति—गुणानां परिणतयः सन्ति यस्मिस्तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहां गुणोंकी परिणतियां हैं वह द्रव्य है, दृष्टिमें सिद्धप्रभुको लक्ष्य रखा गया है । गुणोंकी परिणतियो तात्पर्य यहां शुद्ध परिणतिसे है, जहां उपाधि, निमित्तको पाक परिणतियां होती है व परिणतियां अन्यका आश्रय करने

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

गुणपरिणति शब्दको रहस्य नहीं पाती। कुछ सिद्ध परिणतियां गुणोंमें अभेदताको शीघ्र कर लेती है ज्ञानी पुरुष इन्हें अभेद रूपमें झट पा लेते हैं, इसी कारण सिद्ध पर्याय अविनश्वर प्रसिद्ध हैं अविनश्वर गुणोंकी ये अविनश्वर परिणतियां जहां हैं वह द्रव्य है इस दृष्टिमें अणुकी परिणति अथवा अणुकी जघन्य गुणावस्थामें भी परिणति ऐसी निरुपाधि या अविनश्वर नहीं है, अतः ऐसे शुद्ध निश्चयनयसे द्रव्यके लक्षणका यह विशेषार्थ सिद्ध प्रभुका लक्ष्य करता है। यद्यपि इससे धर्म, अधर्म, आकाश सुलक्षित होता है तथापि वहां परिणतियोंका कोई व्यक्त रूप न होनेसे उन्हें गुण ही जहां पर्यायें हैं वह द्रव्य है, इस लक्षणसे सुलक्षित कर लिया है।

अथवा जिसमें अपने अपने गुणोंकी समय-समय परिणतियां होती चली जाती हैं वह द्रव्य है। इससे सभी द्रव्योंका ग्रहण हो गया। प्रत्येक द्रव्य अपने अपने गुणोंके परिणमन निरन्तर करते हैं समय-समयके परिणमन यद्यपि अपने समय के पूर्व वर्तना होनेपर भी सूक्ष्म होनेसे परिवर्तनका रूप सूचित नहीं कर पाते तथापि सभी द्रव्योंमें गुणपरिणमन निरन्तर होता है।

संगति—गुणानां परिवर्तनानि संति यस्मिंस्तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहां गुणोंके परिवर्तन होते हैं वह द्रव्य है अर्थात् जहांकी हीनाधिकतारूप परिवर्तन स्वयं होता वह द्रव्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

है, इससे परमाणु लक्षित होता है। एक परमाणुका दूसरे परमाणुसे बंध होता जब दो गुण अधिक वाला कोई परमाणु हो। किन्तु एक गुण वाले परमाणुका कभी बंध नहीं होता। परमाणुके गुणकी हीनाधिकता होनेमें संयोग-वियोगादि निमित्त नहीं होने, जैसे दो गुण वाला परमाणु एक गुण वाला रह गया व एक गुण वाला परमाणु दो गुण वाला हो गया इसमें कुछ कलाका काम नहीं, वह परमाणु ही स्वयं ऐसी हीनाधिकताको प्राप्त हो जाता है, इस प्रकार गुणोंकी हीनाधिकता जिसमें होती है वह द्रव्य है। तावतः भी पुद्गलके विषयमें परमाणु ही द्रव्य ह स्कंध तो अणुकी पर्याय है।

अथवा गुणोंके परिवर्तन जहां ज्ञात होते हैं वह द्रव्य है, इस लक्षणसे मुख्यतया स्थूल स्कंध तथा संसारी जीवोंका ग्रहण होता है। अथवा गुणोंके परिवर्तन अर्थात् सूक्ष्म, स्थूल, दृष्ट, अदृष्ट सभी प्रकारके परिवर्तन जहां होते हैं वह द्रव्य है, इस लक्षणसे सभी द्रव्योंका ग्रहण हो गया।

संगति—गुणानां पर्यायाः विकाराः संति यस्मिंस्तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—गुणोके पर्याय अर्थात् विकार जिसमें है वह द्रव्य है, इस लक्षणसे रूपादि गुण गृहीत हुये और रूपादि गुण यहां द्रव्य रूपमें लक्षित हुए, क्योंकि रूपादिका समुदाय ही तो द्रव्य है। पुद्गल द्रव्यके रूपादि गुणोंके विकारको ही यह गुण विकारसे ग्रहण किया, इसका कारण यह है कि आत्माके

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

गुणोंकी पर्याय कभी विकार रूप रहती और फिर स्वभावरूप हो रहती है। अतः विकारका सदा प्रयोग किया जा सकता है तो पुद्गलमें किया जा सकता है। यद्यपि यहाँ यह शंका की जा सकती है कि केवल परमाणुमें जो रूपादिकी पर्यायें हैं वे स्वभावरूप मानी जानी चाहियें, किन्तु इसका उत्तर इस विचारसे ही हो जाता कि जैसे सिद्ध प्रभुकी पर्याय स्वाभाविक है तो द्रव्यके अनुरूप है और उसका गुणोंमें द्रव्यमें बिना असमंजसताके अंतर्भाव कर लिया जाता है, इस तरह कृष्ण आदि वर्णोंका रूपमें अंतर्भाव करनेकी अनुरूपता नहीं मिलती है, इस प्रकार इस लक्षणसे परमाणु द्रव्य सिद्ध हुआ।

अथवा विकारका अर्थ हुआ पूर्वसे विलक्षण परिणमन, सो सभी द्रव्योंमें उत्तरोत्तर नया-नया परिणमन होता है, अतः गुणोंके विकार जिसमें हो वह द्रव्य है ऐसा कहनेसे सभी द्रव्य लक्षित हो गये।

संगति—गुणानां पर्यायवाचि द्रव्यम्।

भावार्थ—द्रव्य अनन्तशक्तिक होता है शक्तिका ही अपर नाम गुण है कल्पना करो कि एक-एक शक्ति करके सब शक्तियाँ हटा दी जावें। तब द्रव्य नामका कुछ तत्त्व नहीं रह जाता है, अतः गुणोंकी ओरसे देखो तो उन सब गुणोंका एक अभिन्न समुदाय ही द्रव्य है, इसलिये द्रव्य कहो या शक्ति कहो एक वाच्यके वाचक हैं, इस प्रकार गुणोंका

Report any errors at vikasnd@gmail.com

पर्यायवाची ही द्रव्य हुआ अर्थात् द्रव्यका नामांतर ही गुण समूह हुआ।

संगति—गुणवतोर्द्रव्ययोर्गुणवता द्रव्याणां वा पर्यायो भेदः संघातो भेदसंघातो वा यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—अशुद्धनयसे घट-पट आदि द्वयणुकसे लेकर बड़े स्कंध तक सब वस्तुयें भी द्रव्य कहलाती हैं उनको इस लक्षण से लक्षित (उपचारित) किया गया है। गुणवान दो द्रव्योंका अथवा गुणवान अनेक द्रव्योंका पर्याय अर्थात् भेद और संघात जहां होता है वह द्रव्य है। कोई स्कंध तो भेद करने पर भी रह जाते हैं और कोई संघातसे बनते हैं और किसीमें कुछ भेद हो जाय व कुछ संघात हो जाय तो स्कंध रहता है, यह द्रव्यका पर्यायदृष्टिसे कथन है। यहां गुणवान पदार्थमें गुणको मुख्य करके गुण द्रव्यसे कहा गया है। इस तरह इस लक्षण से जो कुछ भी दिख रहा है व सूक्ष्म स्कंध भी सब द्रव्य है।

संगति—गुणवतां पदार्थानां पर्यायो भेदो नास्तित्व यत्र तद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जहां गुणवान् अर्थात् पदार्थोंका स्वेतर सब पदार्थोंमें भेद अर्थात् भिन्नता (नास्तित्व) पाया जावे वह द्रव्य है। इस लक्षणसे सभी द्रव्य लक्षित हो गये, क्योंकि सभी द्रव्योंमें स्वसे अतिरिक्त सब पदार्थोंका नास्तित्व स्वतःसिद्ध है।

संगति—गुण्यते विशिष्यते पर्याय अन्यकीयपर्यायाद्यत्र

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

तद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जहाँ एक पर्याय अन्य द्रव्यकी पर्यायसे विशेषित भिन्न की जाय वह द्रव्य है। द्रव्यकी पृथक्तासे ही पर्याय की पृथक्ताका परिचय है व पर्यायकी पृथक्तासे द्रव्यकी स्वतंत्र सत्ता सुगम है।

प्रत्येक द्रव्यकी इस ही स्वतंत्र विशेषताके कारण सर्व व्यवस्थित है। द्रव्यका सत्त्व समझनेके लिये यह बड़ा सुगम उपाय है।

संगति—तदतद्वद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जिसमें तत् व अतत्भाव पाया जावे वह द्रव्य है, द्रव्यके प्रति समयोंमें गुण तत् तत् रूप प्रतिभासित है। और द्रव्यके प्रति प्रदेशमें गुण तत् तत् रूप प्रतिभासित है, इस तत् रूपका विरोध न करके जहाँ पर्यायकृत एवं अनेक गुणोंकी परस्परताकृत अतत्पना पाया जावे वह द्रव्य है। पर्यायदृष्टिसे प्रतिक्षण द्रव्य अतत् है तथा गुणोंके स्वलक्षणसे भी जो एक गुण है वह अन्य नहीं है इस रूपसे भी द्रव्य अतत् है इस तरह तत् अतत् भाव अविरोध रूपसे जहाँ रहे वह द्रव्य है।

संगति—ऊर्द्धवतासामान्यलक्षणं द्रव्यम् ।

भावार्थ—ऊर्द्धवतासामान्य रूप है लक्षण जिसका वह द्रव्य है। द्रव्य अपने प्रत्येक पर्यायोंमें जो कालकृत उर्द्धवता

Report any errors at vikasnd@gmail.com

भावको लिये हुए हैं उन सबमें सामान्यरूपसे अनागत द्रव्य है। जो ऊर्द्धवताको अविनाशीपनको लिये हुए नहीं वह द्रव्य नहीं, पर्याय है। पर्याय ऊर्ध्वता विशेषरूप होती है उन ऊर्द्धवताविशेषोंमें भी जो सामान्यरूपसे रहती है वह ऊर्ध्वतासामान्य द्रव्य है।

संगति—सदकारणवन्नित्यं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो सत् है, कारणरहित व नित्य है वह द्रव्य है। जो सत् नहीं, उसकी चर्चा क्या? जो कारणसहित है वह पर्याय है, नित्य नहीं वह भी दशामात्र है, अतः द्रव्य सत् अकारणक एवं नित्य ही होता है।

संगति—स्वभावसिद्धतत्त्ववद्द्रव्यम्।

भावार्थ—द्रव्य स्वभावसिद्धतत्त्व वाला ही होता है। निमित्त सापेक्ष या औपाधिक भावसे जो तादात्म्य रखे त्रिकाल रहे ऐसा द्रव्य होता ही नहीं है। द्रव्यका स्वभाव स्वयं अनादि प्रसिद्ध है।

संगति—अबद्धमविभागि द्रव्यम्।

भावार्थ—जो अबद्ध अविभागी है वह द्रव्य है। बंधन दो या अनेक द्रव्योंमें होता है वह दो या अनेक द्रव्योंका समुदाय एक द्रव्य नहीं वह अनेक द्रव्यकी है। इसी प्रकार एकका विभाग नहीं हो सकता। जिसका विभाग हो जाय वह पहिले भी एक न था। इस प्रकार जो अबद्ध और अविभागी है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वह द्रव्य है। इस लक्षणसे स्वतन्त्रता और अखंडता सूचित होती है। इसमें विशेष तथा शुद्ध द्रव्यका मूल तत्त्व सूचित किया गया है।

संगति—द्रवति गच्छन्ति ता-तान्भेदन् द्रव्यरूपान् गुण-रूपान् पर्यायरूपान्वेतिद्रव्यम्।

भावार्थ—जो द्रव्यरूप, गुणरूप, पर्यायरूप आदि सब भेदोंको प्राप्त होवे वह द्रव्य है। द्रव्य तो अभेदस्वरूप है, किंतु जब उसे समझने समझानेका प्रसंग हो तब नाना दृष्टियोंसे वह नाना रूप प्रतीत होता है। कभी विविध पर्यायरूप तो फिर गुण रूप पुनर्द्रव्यरूप इसी तरह दृष्टिके बदलते ही उस विषय में अभिप्राय बदलते रहते हैं।

संगति—कारणं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो कारण स्वरूप है वह द्रव्य है। यह अवि-नाशी तत्त्व है इस ही को उपादान करके पर्यायोंका आविर्भाव होता है। इस ही कारणके परिणमनको कार्य अथवा पर्याय कहते हैं। पर्यायोंका कारण स्वभाव है। स्वभाव स्वभाववान में अभेद है, अतः कारणको द्रव्य कहा है। अथवा त्रिकालवर्ती वह वस्तु ही कारण है। जो कारण है वह द्रव्य है।

संगति—द्रवति गच्छति कालक्रमवर्तिस्वरूपानिति द्रव्यम्।

भावार्थ—जो कालक्रमसे चल रहे स्वरूपको प्राप्त हो वह द्रव्य है। द्रव्य प्रतिसमय पर्यायस्वरूप रहता है, पर्याय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

बिना द्रव्यका ही अभाव है। तब प्रतिसमयोंमें प्रत्येक स्वरूप होते हैं उन सबमें जो एक रहता है वह द्रव्य है। इस लक्षण से यह प्रकट हुआ कि प्रतिसमय प्रति पर्यायमें रहता हुआ वह द्रव्य परिपूर्ण है और यही एक द्रव्य प्रतिसमय पूर्ण रहता हुआ सर्व स्वरूपोंको प्राप्त होता रहता है।

संगति—द्रवति गच्छति देशक्रमवर्तिस्वरूपानिति द्रव्यम्।

भावार्थ—जो देश क्रमसे रहने वाले स्वरूपोंको प्राप्त होता है वह द्रव्य है। जो द्रव्य असंख्यात प्रदेशी है उसके प्रत्येक प्रदेशमें जो एक अखंड स्वरूप है, वे द्रव्यके ही स्वरूप हैं उनको जो व्यापता है वह द्रव्य है। इस लक्षणसे प्रदेशवत्व गुणकी मुख्यता दृष्ट हुई है।

देश क्रमसे रहने वाले स्वरूपोंको प्राप्त होता है इस कथन से गुणोंको प्राप्त होना कहा है। यह देशक्रम भिन्न-भिन्न देश में भिन्न गुण हों ऐसा नहीं है, किन्तु एक ही साथ रहने वाले बहुतोंके क्रमसे बतानेको भी देशक्रम कहा जाता है।

संगति—उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो उत्पादव्ययध्रौव्य करिके सहित हों वह द्रव्य है। द्रव्यमें ये तीनों तत्त्व होते ही हैं, इनके बिना द्रव्य कुछ नहीं है, असत् है। समय तो अनन्त है ही, एक समयसे दूसरे समयमें द्रव्य पहुंचता ही है। जो दूसरे समयमें पहुंचनेकी अवस्था है वह उत्पाद है। पहले समयकी अवस्था छूट गई

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

वह व्यय है और जो अवस्थावोंमें पहुंचता रहता है वह एक है। इस दृष्टिके विषयको ध्रौव्य कहते हैं, इन तीनोंसे युक्त द्रव्य है। यह कालकी अपेक्षा असीम लेना द्रव्य देखनेकी दृष्टि है।

संगति—प्रदेशवत्त्वगुणवद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो प्रदेशवत्त्व गुण वाला है वह द्रव्य हैं। द्रव्य के स्वरूपको समझनेके प्रथम यत्नमें जिज्ञासुका भाव उस स्थान पर पहुंचता है, फिर उसको अक्षय करके गुण वर्णन करता हुआ फिर उस अक्षयको छोड़कर गुणस्वरूपकी दृष्टिके अनन्त अभेदस्वभाव पर पहुंचता है इस तत्त्व क्रमका ध्यान देकर इस लक्षणसे द्रव्यका बोध कराया गया जो प्रदेश वाला है और प्रदेश वालेके एक भावस्वरूप भाव वाला है वह द्रव्य है।

संगति—क्रियावद्गुणवत्समवायिकारणं द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो क्रियावान्, गुणवान् एवं समवायी कारण-भूत है वह द्रव्य है। कर्मशून्य कोई द्रव्य नहीं होता यदि क्रिया-परिवर्तन नहीं हो तो वह द्रव्य नहीं तथा वह क्रिया शक्तिका ही कार्य है। शक्तिका अपर नाम गुण है। उन शक्तियोंसे द्रव्य अभिन्न है। यदि शक्ति गुण न हो तो वह द्रव्य क्या ? इस तरह द्रव्य क्रियावान् गुणवान् है और उन दोनों अर्थात् पर्याय एवं गुणोंमें अभेद सम्बन्धको रखता हुआ

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

उनका कारणभूत है, अतः द्रव्यका यह लक्षण तीन स्वरूपपर दृष्टि कराता है कि द्रव्य पर्यायवान् है और गुणवान् है एवं उन दोनोंमें रहता हुआ भी कारणभूत मूल स्वरूप भी रखने वाला है।

संगति—पर्यायसमुदायो द्रव्यम्।

भावार्थ—पर्यायोंका समुदायभूत द्रव्य है। प्रति समय कुछ है, वही पर्याय है, ऐसी अनन्त पर्यायोंका समुदाय (बुद्धि गत) द्रव्य है।

यहाँ प्रतिसमय पर्यायरूप वस्तुको दृष्टिमें रखकर कहा गया है जिससे दो सिद्धांत प्रकट हुए हैं—१—द्रव्य अनादि है, २— अनन्त है।

क्योंकि प्रत्येक पर्याय पूर्वपर्यायपूर्वक ही है। पूर्व पर्यायके अभावको सत् करने वाला भाव ही उत्तरपर्याय है। ध्यति २० पर्याय रिक्त द्रव्य एक क्षण भी नहीं रहता।

संगति—द्रवितुं योग्यं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो द्रव्य होनेके योग्य है वह द्रव्य है। पर्याय से पर्यायान्तरमें पहुंचने वाला ही द्रव्य है। यह द्रव्य अनादिसे है, अनन्तकाल तक रहेगा। जो द्रवे नहीं वह कुछ नहीं है। इस लक्षणसे प्रतिसमय परिणमनशीलता प्रकट की गई है।

संगति—पूर्वकालविषयं द्रव्यम्।

भावार्थ—पूर्वकालविषयक है वह द्रव्य है। द्रव्य अनादि

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

है, जो आदिमान है वह नियमसे पर्याय है जिसे भी एक काल कल्पना किया जावे उससे भी पूर्व कालमें द्रव्य है, इस तरह द्रव्य अनादि ही सिद्ध है तथा जो अनादि सिद्ध है वह अहेतुक ही है तब द्रव्य स्वतन्त्र सत्तावान् प्रसिद्ध हुआ।

संगति—कालान्तरावस्थायि द्रव्यम्।

भावार्थ—कालान्तरमें अर्थात् उत्तरकालमें भी अथवा पूर्व उत्तर समस्त कालोंमें अवस्थित रहने वाला द्रव्य है। इस लक्षणसे सामान्य तत्त्व मुख्य दृष्ट हुआ। जो कालान्तरमें भी अवस्थायी है वह द्रव्य है काल नाम पर्यायका भी है। जो पर्यायान्तरोंमें भी अवस्थायी रहने वाला है वह द्रव्य है। द्रव्य वर्तमान कालपर्याय मात्र नहीं है। अथवा वर्तमान समय तो वर्तमान होकर नष्ट हो रहा है और वर्तमान समयमात्रके उपयोगमें अवग्रह भी नहीं होता है, अतः वर्तमानसे पहिचान अशक्य होनेसे कालान्तरकी दशावोंकी अपेक्षा रखकर पहिचान हो पाती है, अतः कालान्तरावस्थायी भी द्रव्य है।

संगति—स्वपरप्रत्ययोत्पादविगमपर्यायान्द्रवतीति द्रव्यम्।

भावार्थ—अन्तरंग स्व बहिरंग परकारण इनसे जात उत्पाद और व्ययकी पर्यायोंको जो द्रवे करे, जावे वह द्रव्य है। इस लक्षणसे यह प्रकट है कि वस्तु अपनी ही परिणतिसे परिणमती है तथापि उस परिणमनमें निमित्त मात्र अनुकूल परद्रव्य भी बाह्य कारण है। चाहे वह कुछ भी हो। यह स्व

Report any errors at vikasnd@gmail.com

तो उपादान कारण अन्तरंग कारण है। परपदार्थ निमित्त कारण बहिरंग कारण है। बहिरंग कारणका कुछ भी तत्त्व उपादानमें पहुंचता नहीं है। मात्र एक विशिष्ट वातावरणमें उपादान अपनी शक्तिको व्यक्त करता है।

संगति—व्यञ्जनपर्यायवद्द्रव्यम्।

भावार्थ—व्यञ्जन पर्यायवान द्रव्य है। द्रव्यका प्रारम्भ, स्थूल व आकार व्यञ्जन पर्याय है, जिसके व्यञ्जन पर्याय प्रकट होती है वह द्रव्य है। व्यंजन पर्याय अर्थपर्यायका आधार है, अतः इस लक्षणसे एक लक्ष्य स्थिर किया गया। व्यंजन पर्याय का आधार प्रदेशवत्व गुण है और अभेददृष्टिसे सभी गुण है आकारके ज्ञात हुए बिना द्रव्यकी कोई बुद्धि या कल्पना भी नहीं चल सकती। इस लक्षणसे यह मंतव्य निकला कि द्रव्य साकार होता ही है, चाहे वह एक प्रदेशी हों या बहुप्रदेशी। इस लक्षणसे सभी द्रव्य लक्षित हुए।

संगति—गुण समुदायो द्रव्यम्।

भावार्थ—गुणोंका समुदाय स्वरूप द्रव्य शक्तिपुञ्ज हैं ये शक्तियाँ द्रव्यसे भिन्न नहीं हैं और सर्व शक्तियोंसे व्यतिरिक्त द्रव्य कुछ नहीं है, अतः इस चिह्नसे द्रव्यकी शक्तिमहत्ताका दर्शन हुआ है। यहाँ सर्व पर्यायें गुणोंमें अन्तर्लीन हैं।

संगति—सद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जो सत् है वह द्रव्य है। जो 'है' तो द्रव्य ही

Version 1

है। द्रव्यके लिये सद्भावात्मकपना चाहिये, फिर द्रव्यत्वके विरोधका अवकाश ही नहीं है। इस लक्षणसे लक्षित तत्त्व ज्ञान एवं वचनका भी आश्रयभूत है, क्योंकि इसके अभावमें न तो वचन ही हो सकता और न विज्ञानकी वृत्ति ही कोई हो सकती।

संगति—गुणसमवायो द्रव्यम्।

भावार्थ—जहाँ गुणोंमें गुणोंका समवाय पाया जावे वह द्रव्य है। द्रव्यमें प्रत्येक गुण सर्व गुण सहित है। जैसे आत्मा में ज्ञान सुखमय है, शक्तिमय है, सूक्ष्म है, अमूर्त है इसीलिये सुख भी ज्ञानमय है, शक्तिमय है, सूक्ष्म है, अमूर्त आदि। इस प्रकार प्रत्येक गुण सर्व गुणोंको मित्र रखकर गर्भित कर रहते हैं यह व्यवस्था जहाँ है वह द्रव्य है इस व्यवस्थाका संकेतक गुण विभुत्व कहलाता है, यदि ऐसी विभुता न रहे तो एक भी गुण सद्भावको प्राप्त नहीं हो सकता। इस तरह गुणके अभाव में द्रव्यका अभाव हो जायगा।

संगति—पूर्वापरविवर्तव्यापि द्रव्यम्।

भावार्थ—जो पूर्व उत्तर सभी विवर्तोंमें व्यापता है, वही एक व्यापता है वही एक द्रव्य है। वस्तुतः सब त्रिवर्तोंमें से गुजरकर भी किसी एक विवर्त रूप नहीं रहता। नैगमनयसे त्रिकाल द्रव्यकी प्रसिद्धिके लिये सर्व विवर्तव्यापी द्रव्य है अन्यथा एक क्षणके भी विवर्तके असम्बंधमें द्रव्यका ही विध्वंस

http://www.jainkosh.org

हो जायगा, परन्तु द्रव्य अविनश्वर है।

संगति—वाच्योऽर्थो द्रव्यम्।

भावार्थ—जो वाचक शब्द द्वारा वाच्य अर्थ है वह द्रव्य है। जितने शब्द हैं उतने ही वाच्य हैं उन्हें वे सद्भूत अर्थ बताते हैं, वाक्यार्थका वाक्य वैसा हो चाहे न हो, परंतु शब्दार्थ का वाच्य सद्भूत है वही द्रव्य है। यहाँ अर्थ शब्द कहा है अर्थात् जो स्वतन्त्र है वह द्रव्य है इससे गुण वर्णादि द्रव्य नहीं रहे, क्योंकि वे सब द्रव्यांश हैं। इस लक्षणसे श्रुतज्ञानात्मक द्रव्यको भी प्रसिद्धि हुई। द्रव्य ३ हैं—शब्दद्रव्य, अर्थद्रव्य, ज्ञानद्रव्य। यहाँ शब्दद्रव्यके द्वारा वाच्य अर्थद्रव्य तथा ज्ञान द्रव्य सुलक्षित किया गया है।

संगति—अर्थक्रियां प्रति प्रयुज्मानं द्रव्यं

भावार्थ—जो अर्थक्रियाके प्रति लगा हुआ है वह द्रव्य है। द्रव्य है तो उसका काम भी है उस क्रियाके प्रति लगा हुआ अनन्त अर्थक्रियाओंमें जो चल रहा है वह द्रव्य है। इस लक्षण द्वारा अर्थक्रिया शून्य कुछ भी नहीं है यह सिद्ध हुआ।

संगति—उपयोगाकारो द्रव्यम्।

भावार्थ—जो उपयोगाकार है वह द्रव्य है अथवा जिस ज्ञेय विषय आकार उपयोगमें है वह द्रव्य है। इससे प्रमेयत्व गुणकी विशेषता प्रकट होती है तथा आत्मा निश्चयसे किसी द्रव्यको जानता है इसका उत्तर समहादित हुआ। आत्मा निज

Version 1

 http://sahjanandvarnishastra.org/

ज्ञेयाकारको ही जानता है। वह निज ज्ञेयाकार द्रव्य व्यवहारतः ज्ञेय अन्य-अन्य पदार्थों जैसे आकार रूप प्रतिमामें है। अतः निश्चयसे आत्माने जिसका निश्चय किया वह द्रव्य उपयोगाकार स्वरूप है।

संगति—स्वरूपचतुष्टयं द्रव्यम्।

भावार्थ—वस्तुके द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव इन चतुष्टयोंसे अभिन्न समुदाय द्रव्य है। इस लक्षणसे वस्तुकी पहिचानके ४ उपाय दिखाये गये हैं। इन चार उपायोंसे वस्तुका सम्यक् परिज्ञान होता है। द्रव्य तो उस एक पिण्डको कहते हैं, क्षेत्र प्रदेशरचनाको कहते हैं, काल पर्यायको संकेतित करती है और भाव गुणोंको बताता है। जो स्वचतुष्टयात्मक अखण्ड है है वह द्रव्य है।

संगति—परचतुष्टयाभाववद्द्रव्यम्।

भावार्थ—परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, परभावके अत्यन्ताभाव वाला जो है वह द्रव्य है। यदि किसी वस्तुमें परका कुछ चतुष्टय आवे तो यह वस्तु ही न रहे। यह शक्ति भी स्वयं उस ही वस्तुरूप ही है जो परका ग्रहण नहीं होने देता। इस चिह्नसे एक द्रव्यके किसी भी परद्रव्यका कर्तृत्व भोक्तृत्व नहीं हो सकता यह सिद्ध होता है।

संगति—असहायं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो किसीकी सहायता न रखता हो वह द्रव्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

है। द्रव्यकी द्रव्यता तभी कायम रहती है जब द्रव्य स्वयंसिद्ध परिपूर्ण हो, क्योंकि ऐसा ही तत्त्व परकी सहाय नहीं रखता। यहाँ असहायसे परके सम्बन्धमात्रका निषेध हो जाता है। यदि परकी सहायतासे अस्तित्व या परिणमन हो तब वस्तुका ही अभाव हो जावेगा। इसलिए वस्तु अन्यकी सहायतासे रहित स्वयं परिपूर्ण है और वह द्रव्य है।

संगति——ससहायं द्रव्यम्।

भावार्थ——जो स्वयं सहाय सहित है वह द्रव्य है। द्रव्य कभी अरक्षित नहीं होता, क्योंकि वह स्वसहाय है परका प्रवेश ही उसमें नहीं है। इससे स्वतन्त्रता सिद्ध हुई तथापि परसहायसहित द्रव्य है इस अर्थकी दृष्टिमें यह बात सिद्ध होती है कि निमित्त बिना द्रव्यकी परिणति नहीं है। इससे परापेक्ष द्रव्य हुआ, किन्तु वह परकी अपेक्षा नहीं है जो परस्पर कोई लेन-देन रहता है ऐसा होने पर भी सर्व स्वतन्त्र है। पर तो एक वातावरण है जिसके समीप रहने वाला द्रव्य स्वयं अपने परिणाम स्वभावसे परिणमाता है।

संगति——महासत्ता द्रव्यम्।

भावार्थ——व्यापक दृष्टिसे देखा जाय तो सत् द्रव्य है और सत्के रूप-लक्षणमे कोई सीमा नहीं, व्यक्ति नहीं, अतः वह सत् एक है इसलिये एक वह सत् अथवा महासत्ता द्रव्य है, यह शुद्ध संग्रहनयका विषय है।

Version 1

संगति—आवान्तरसत्ता द्रव्यम् ।

भावार्थ—द्रव्य आवान्तर सत्तारूप है, जितनेमें एक परिणमन है उतना ही वह द्रव्य है इससे द्रव्य आवान्तर सत्‌रूप है । विशिष्ट सत्‌का ज्ञान कर महासत् ही एक द्रव्य माना जावे तो सर्व परिणमन एक हो जाना चाहिये सो तो है नहीं, अतः द्रव्य असाधारण स्वभावमय एवं आवान्तर (विशिष्ट सत्) सत्तारूप है । इसीका विशेष भाव लेनेपर द्रव्यका सत्त्व, गुण का सत्त्व, पर्यायका सत्त्व समझमें आ जाता है । मायारूपका भ्रम खण्डित हो जाता है ।

संगति—नाना द्रव्येषु सामान्य धर्मावच्छिन्नम् ।

भावार्थ—जो नाना द्रव्योमें सामान्य धर्म करि सहित हो वह द्रव्य है । वे सामान्य धर्म ये हैं—अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशवत्व, प्रमेयत्व । इस लक्षणमें केवल सत्स्वरूपकी दृष्टि छोड़कर इन छहों गुणोंकी दृष्टि ली गई है शेष बात महासत्ताकी तरह है । यह सामान्यकी तरह है । यह सामान्य द्रव्यदृष्टिसे वर्णन है । इस लक्षणसे सभी द्रव्य लक्षित हुए, परन्तु उनका व्यवच्छेद सूचित नहीं होता ।

संगति—विशेषवद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो विशेषता वाला है वह द्रव्य है । चिन्हसे व्यवहार अर्थ क्रिया आदिकी मुख्यता रखी है । विशेष बिना द्रव्य कुछ रह नहीं सकता । प्रतिसमय विशेष चल रहा हो,

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

इन्हीं विशेषोंमें सामान्य तिरोहित रहता है। ऐसे विशेष करि सहित जो है वह द्रव्य है। यह विशेषित द्रव्यकी दृष्टि है।

संगति--क्रियावद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जो क्रियावान है वह द्रव्य है। क्रिया परिणति को कहते हैं जिसकी क्रिया हो वही तो द्रव्य है। इस चिह्नसे दो बातें प्रकट होती हैं—१–द्रव्य परिणतिशील है, २–एक की क्रियाको दूसरा कोई नहीं करता। वही द्रव्य कर्ता है उसकी क्रिया ही उसका कार्य है तथा इस चिह्नसे प्रकट क्रिया वाले जीव, पुद्गल २ द्रव्योंका ग्रहण मुख्यतया हुआ। जो क्षेत्र से क्षेत्रान्तररूप क्रिया भी करते हैं। यह स्वक्षेत्र और परक्षेत्र की दृष्टिसे निरूपण है। क्रियाका अर्थ जब परिणति हों तब इस लक्षणसे सभी द्रव्य गृहीत हैं, किन्तु क्रियाका अर्थ क्षेत्रसे क्षेत्रान्तर लिया जावे तब जीव पुद्गलका ग्रहण होता है।

संगति—पर्यायवद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जो पर्यायवान है वह द्रव्य है। द्रव्य प्रतिसमय पर्यायवान रहता है। पर्याय वाला जो रहा करता हैं वह द्रव्य है। इस लक्षणसे यह ध्वनित किया कि द्रव्य पर्याय वाला है, परन्तु किसी एक पर्यायमें तन्मय नहीं है अथवा पर्यायमय द्रव्य है, इस लक्षणसे यह प्रकट हुआ कि द्रव्य किसी न किसी अवस्था पर्यायमें रहा ही करता है जिस समय जिस पर्यायको धरता है उस समय उस पर्यायमय द्रव्य है।

Version 1

संगति—गुण एव द्रव्यम् ।

भावार्थ—समस्त गुण ही अभेदरूपसे एक द्रव्य है । द्रव्य का जब भी निरूपण होगा, गुणमुखेन होगा । जैसे आत्माका चैतन्य गुणके द्वारा, पुद्गलका मूर्त गुणके द्वारा आदिमें तो प्रधान गुण है । सूक्ष्म बिवरणमें भी अनेक गुण देखे जाते हैं वे सब गुण पिण्डरूप देखे जाने पर द्रव्य है ।

संगति—पूर्णं समयवर्ती द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो प्रतिसमयवर्ति है वह प्रतिसमय पूर्ण है, वह द्रव्य है । द्रव्यमें स्वभावकी मुख्यता है, स्वभाव प्रतिसमय परिपूर्ण रहता है जो पूरा रहता है वह द्रव्य है । यदि अपूर्ण हो अधूरा हो तो जिस अवस्थामें पूर्णकी बुद्धि रखकर अपूर्ण अधूरा माना, उस अपूर्णसे पूर्णावस्था कभी नहीं हो सकती । द्रव्य प्रतिसमय पूर्ण है ।

संगति—गुणवद्द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो गुणवान है वह द्रव्य है, सर्व गुणोंका अभेद पिण्डरूप एक द्रव्य ऐसा आधार है जिसमें गुण होते हैं तब उन सब गुणोंका अभेदरूप एक आधार द्रव्य है यह सिद्ध हुआ । यह भावदृष्टिसे वर्णन है, भावदृष्टिमें यह निरपेक्ष समय-वर्ती पर्यायको भी द्रव्यपन आता है, क्योंकि उस निरपेक्ष समयवर्ती पर्यायमें गुणोकी निरपेक्षताकी समता है । परन्तु यह एक ऋजुसूत्रनयकी सूक्ष्म दृष्टि है, इस लक्षणसे सभी द्रव्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

गृहीत हैं और द्रव्योंकी पर्यायें गुणोंमें अन्तर्लीन हो जाती हैं।

संगति—त्रैकालिकं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो त्रैकालिक है वह द्रव्य है। तीनों कालोंमें अवस्थित है एक अखण्ड सत् द्रव्य है, इस चिन्हसे यह सिद्धांत विदित हुआ कि कोई भी द्रव्य कभी भी किसीके द्वारा बनाया हुआ नहीं है वह स्वयं अनादि सिद्ध है तथा उसका अन्त भी कभी आ सकने वाला नहीं है। इस लक्षणसे सभी द्रव्य गृहीत होते हैं।

संगति—कालरहितं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो कालरहित है वह द्रव्य है, द्रव्य तत्त्व काल की अपेक्षा नहीं रखता वह अकालीय है। काल पर्यायको भी कहते हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि द्रव्य स्वरूप पर्यायको गौण करके ही ज्ञानमें प्रकट होता है। द्रव्यका लक्षण उत्पाद व्ययध्रौव्ययुक्त भी है। यहाँ उत्पाद और व्यय तो वर्तमान काल है और ध्रौव्य त्रिकाल इन दोनोंमें जो युक्त हो उसे न तो वर्तमान काल ही कह सकते और न त्रिकाल ही कह सकते हैं, ऐसा कालरहित वह द्रव्य है।

संगति—द्रव्यत्वजातिमद्द्रव्यम्।

भावार्थ—जो द्रव्यत्व जातिमान है वह द्रव्य है लोकमें नामधारी या व्यक्तिसे अतिरिक्त सामान्यभावसे वस्तु देखते हैं तो जातिमुखसे ही देख पाते हैं जैसे गौ, अश्व, मनुष्य आदि।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

इसी तरहसे सब द्रव्य हैं तो द्रव्यमें पाये जाने वाले समान भावोंकी साधकतासे द्रव्यत्व जातिके द्वारा समझते हैं कि यह द्रव्य है। इस लक्षणमें संग्रहनयके अभिप्रायसे सर्वका ग्रहण है।

संगति—एकमिति व्यवहारजनकं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो 'यह एक है' इस व्यवहारको कराता है। अखण्ड एक परसे विभक्त सत् जो परिपूर्ण है उसके ही कारण तो उसीमें यह एक है ऐसा व्यवहार होता है। सभी द्रव्य स्वरूपास्तित्वसे एक हैं। अतः यह लक्षण सभी द्रव्योंमें घटित होता है। परन्तु लौकिक पुरुषोंके लिये स्कंध और मनुष्य आदि पर्याय एक-एक होती है उनके लिये उतना ही द्रव्य है।

संगति—अविष्वग्भावो द्रव्यम्।

भावार्थ—जो अविष्वग्भावरूप है वह द्रव्य है उसमें जो प्रतीत होता है उससे वह अभिन्न है वही द्रव्य है। द्रव्य कभी बिखरा छीछला नहीं होता वह अपने स्वरूपमें अखंड और घन (निरन्तर) रहता है। ऐसा अविष्वग्भावी द्रव्य है। यह चिह्न करता तो विषय एकको है, परन्तु शक्तियोंके सम्बन्धको संयुक्त करके करता है, अतः इसकी दृष्टि समवाय संबंध तादात्म्य सम्बंधकी मुख्यता लेकर है। इस लक्षणमें भी सब द्रव्यों का समावेश है।

संगति—सदिति प्रत्ययविषयं द्रव्यम्।

भावार्थ—'सत्' इस प्रत्यय ज्ञानका विषयभूत जो है वह

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

द्रव्य है। जिसको लक्ष्य करके सत् कहनेमें आ जाता अथवा सत् कहते ही जो ज्ञात हो जाता है वह ही तो द्रव्य है। जो नहीं है उसका प्रत्यय करने वाला न विकल्प है, न शब्द है। यह प्रमेयत्व गुणकी मुख्यताको लेकर बनी हुई दृष्टि है। सभी द्रव्य प्रमेय है और सत् इस प्रत्ययके विषय हैं।

संगति—परिणामि द्रव्यम्।

भावार्थ—जो परिणाम वाला है वह द्रव्य है। जो परिणमन करता है वह द्रव्य है, जो परिणमनशील है वह द्रव्य है। इस चिन्हसे मुख्यतया प्रकट परिणामी जो जीव, पुद्गल इन दो का ग्रहण होता है। तत्त्वतः परिणामी सभी द्रव्य हैं, क्योंकि परिणमन बिना वस्तुका अस्तित्व ही संभव नहीं है।

संगति—सप्रदेशं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो सप्रदेश है वह द्रव्य है, बहुप्रदेशोंसे युक्त हो द्रव्य है, इस दृष्टिमें तो जीव, स्कंध, शक्ति अपेक्षा अणु, धर्म, अधर्म, आकाश गृहीत हुए और जो प्रदेश सहित है वह द्रव्य है चाहे एक प्रदेश हो या बहुत इस दृष्टिमें सभी द्रव्य आ गये। प्रदेश बिना कुछ रचना या गुण नहीं, अतः सप्रदेश द्रव्यं यह चिन्ह सरल है।

संपति—नित्यं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो नित्य है वह द्रव्य है, यद्यपि नित्य सभी द्रव्य हैं तथापि जिनका परिवर्तन नहीं वैसे ही वर्तते रहते हैं
Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

उन द्रव्योंका मुख्यतया ग्रहण इस दृष्टिमें होता है वे द्रव्य ४ हैं—धर्म, अधर्म, आकाश और काल ।

संगति—मूर्तं द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो अपनी कोई मूर्ति रखते हैं वह मूर्त है, वह द्रव्य है । यद्यपि सप्रदेशी होनेसे सभी अपना आकार रखते हैं, किन्तु मूर्ति जो इन्द्रिय मनके द्वारा मूर्ति बोधका विषय बन जाता है उस दृष्टिसे पुद्गलका ग्रहण होता है तथा विशेषतया देखो तो संसारी जीव भी कर्मबंध सहित होनेके कारण मूर्त होनेसे ग्रहीत हो जाता है । तभी सर्व साधारणोंको इन दोनों का परिचय है अथवा उपयोगमें आनेपर वह द्रव्य अपना कुछ रूप लेकर प्रकट होता है, ऐसे ज्ञानकी अपेक्षासे द्रव्य मूर्त प्रतीत होता है, अतः जो मूर्त है वह द्रव्य है ।

संगति—क्रियावद्गुणवत्समवायि कारणं स्वतन्त्रं द्रव्यम् ।

भावार्थ—क्रियावान गुणवान समवायिकारणको द्रव्य कहते हैं अर्थात् जो क्रिया भी करता है, गुणोंसे भी युक्त है, ऐसे जो समवायीकारण अर्थात् प्रत्येक परिस्थितिमें अपनी संततिको न छोड़ने वाला कारणभूत अर्थ द्रव्य है । यह इन शब्दोंका पर्यायवाची है पर्यायवान गुणवान ध्रुवस्वभावी द्रव्य है । इतना ही नहीं, किन्तु वह परकी आधीनतासे रहित है, स्वके ही आधीन है ।

संगति—पर्यायाधारो द्रव्यम् ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

भावार्थ—पर्यायका जो आधार है वह द्रव्य है । पर्याय अर्थात् दशा वस्तुकी होती है उस दशाका आधार वही वस्तु है जिसकी दशा है, वस्तु किसी न किसी दशामें रहती ही है वस्तुका जो वर्तमान है वही वस्तुका पर्याय है । पर्याय वस्तुसे ही उद्भूत होती है, अतः जो पर्यायका आधार है वही द्रव्य है ।

संगत्ति—पर्यायस्रोतो द्रव्यम् ।

भावार्थ—पर्यायका जो स्रोत है वह द्रव्य है अर्थात् पर्याय निकलनेका जो मूल स्थान है वही द्रव्य है । पर्यायका सत्त्व पहलेसे नहीं रहता, फिर भी पर्याय कहीं बाहरसे नहीं आती वह सत्द्रव्यकी अवस्थामात्र है, अतः पर्यायका निकलना कहते हैं । पर्यायका जो स्रोत अर्थात् उद्गमस्थान है वह द्रव्य है ।

संगति—उत्पादव्ययाश्रयो द्रव्यम् ।

भावार्थ—जो उत्पाद व्ययका आश्रयभूत है वह द्रव्य है । उत्पाद नवीन अवस्थाको कहते हैं और व्यय पूर्व अवस्थाके अभावको कहते हैं । द्रव्यमें काम प्रतिसमय एक-एक होता जा रहा है वही एक उत्पादरूप और व्ययरूप है इसका आश्रय ध्रुव द्रव्य है, क्योंकि उत्पादव्ययध्रुवका एक परिणाम है ।

संगति—निरंतरोत्पादो द्रव्यम् ।

भावार्थ—निरन्तर जिसका उत्पाद होता चला आ रहा है वह द्रव्य है अथवा उत्पादोंकी संतति द्रव्य है । द्रव्य कुछ दिखता नहीं है । ज्ञात यह पर्याय हो रही है । ये पर्यायें क्षण

Version 1

मात्रके भी अन्तरसे रहित प्रतिसमय होती चली जाती है, अतः इन पर्यायोंकी संगति अथवा संतति जिसमें है वह द्रव्य है।

संगति—निरंतरव्ययो द्रव्यम्।

भावार्थ—निरंतर जिसमें व्यय होता रहे उसे द्रव्य कहते हैं। उत्पादकी दृष्टिमें निरंतर उत्पाद दिखता था। उत्पाद व्यय स्वरूप है, जब व्ययकी दृष्टिसे देखें तब निरंतर व्यय प्रतीत होता है निरंतर व्यय जिसमें होता रहे वह द्रव्य है।

संगति—शक्तिमात्रं द्रव्यम्।

भावार्थ—शक्तिमात्रको द्रव्य कहते हैं। पर्यायोंका संतान सदा चला जा रहा है प्रतिसमय पर्यायमय वस्तु है। प्रत्येक पर्यायें जिस एकके होती हैं वह द्रव्य है, ऐसा कहनेपर साकार कुछ नजर नहीं आता, क्योंकि जो साकार है वह पर्याय है। अतः वह द्रव्य शक्तिमात्र ज्ञात हुआ।

संगति—अमूर्तं द्रव्यम्।

भावार्थ—जब शक्तिमात्र द्रव्य ज्ञात हुआ तब द्रव्य किसी ढाँचा रूप विदित नहीं होता वहाँ द्रव्य अमूर्त प्रतीत होता है जब पर्याय विशिष्टताकी दृष्टि करते हैं तब मूर्तता विदित हो पाती है। यहाँ शक्तिमात्र द्रव्यकी दृष्टि पानेके बाद उसी आधारपर व्यक्त करते चला जावे तब अमूर्त ही द्रव्य प्रतीत होता।

संगति—निराकारं द्रव्यम्।

भावार्थ—जो भी आकार द्वारा प्रतीत है वह तो पर्याय

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

है। उन पर्यायोंका आधार जो शक्तिमात्र वस्तु है वह निराकाररूपसे ही प्रतीत हुआ, अतः जो निराकार है वह द्रव्य है। प्रदेशवत्त्व गुणकी दृष्टिसे ले तो वहाँ व्यञ्जनपर्याय ही झट आ चमकती है, अतः मात्र द्रव्यके जाननेके यत्नमें वह निराकार प्रतीत होता है, अतः यहाँ यह प्रसिद्ध हुआ कि जो निराकार है वह द्रव्य है।

संगति—साकारं द्रव्यम्।

भावार्थ—द्रव्य चाहे अमूर्त हो चाहे मूर्त हो, ज्ञानमें ज्ञेयाकारता तो द्रव्यविषयक होती ही है सो इस ज्ञेयाकारताकी दृष्टिसे द्रव्य साकार प्रतीत हुआ अथवा सभी द्रव्य प्रदेशवान हैं, अतः सिद्ध हुआ कि साकार द्रव्य है।

संगति—परिवर्तमानगुणस्थैकत्वं द्रव्यम्।

भावार्थ—प्रतिसमय वर्तते हुए गुणोंमें रहने वाली एकता ही द्रव्य है। गुणोंमें रहने वाला, गुणोंसे अभिन्न व गुणोंसे विलक्षण गुणोंका एकत्व द्रव्य है।

द्रव्य पर की हुई दृष्टि निर्विकल्पताकी जननी है, अतः प्रयत्न करके द्रव्यस्वभावको जानकर, प्रतीत कर द्रव्यके अनुरूप अपना आचरण बनाना कल्याणका उपाय है।

उपसंहार—द्रव्य शब्दके वाचक विभिन्न शब्दोंपर दृष्टि देनेसे ऐसे ही अनेक अर्थ प्रतिभासित होते हैं और उनसे विभिन्न कलावोंके परिज्ञानके साथ-साथ वस्तुस्वरूपका भी विशद

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

बोध होता जाता है । निश्चयतः द्रव्य अनिर्वचनीय है । द्रव्यके अनन्त सामर्थ्य और परिणमन है उन सामर्थ्यों और परिणमनोंके दिखानेके उपाय द्वारा द्रव्यस्वरूप पर दृष्टि पहुंचानेका यत्न किया जाता है । जो कहा गया वह स्वरूप नहीं, अनेकों उपायोंसे जो एक विकल्प रहित समझमें आया वह द्रव्य है । विकल्परहित यह भी नय है, अतः जो अनुभवमें व प्रमाणमें आया वह द्रव्य है । यदि वस्तुके सम्बंधमें यह कहा जावे कि वह गुणरूप है तो यह एक नय हुआ, पर्यायरूप कहें तो यह भी एक नय है, भेदरूप या अभेदरूप कहें तो यह भी नय है, विशेषरूप या सामान्यस्वरूप कहें तो यह भी नय है, सामान्य विशेषात्मक कहें तो यह भी नय है, जो भी कहें वह एक नय है, अतः ये सब व्यवहार है । निश्चय तो प्रतिषेधगम्य है, प्रतिषेधरूप है, सो निश्चय भी एक नय है । फलितार्थ यह है कि यथार्थ वस्तुको अनेक उपायोंसे जानकर फिर सहज प्रमाण करना चाहिये । उक्त द्रव्यकी किरणोंमें कुछ संगतियां विशेष द्रव्यको बताने वाली है तो भी उनसे कलाका ज्ञान कर पूर्ण पर लक्ष्य देना । द्रव्यबोध समस्त क्लेशोंके नाशका मार्ग है ।

ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शांतिः

॥ समाप्त ॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आत्मरमण

मैं दर्शनज्ञानस्वरूपी हूं, मैं सहजानन्दस्वरूपी हूं ।।टेक।।

हूं ज्ञानमात्र परभावशून्य, हूं सहज ज्ञानघन स्वयं पूर्ण ।

हूं सत्य सहज आनन्दधाम, मैं सहजानन्द० ।। मैं दर्शन० ॥१

हूं खुदका ही कर्ता भोक्ता, परमें मेरा कुछ काम नहीं ।

परका न प्रवेश न कार्य यहां, मैं सहजानन्द० । मैं दर्शन० ॥२

आऊं उतरूं रम लूं निजमें, निजकी निजमें दुविधा ही क्या ।

निज अनुभवरससे सहज तृप्त, मैं सहजानन्द० । मैं दर्शन० ॥३

मंगलतंत्र

ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शुद्धं चिदस्मि

मैं ज्ञानमात्र हूं, मेरे स्वरूपमें अन्यका प्रवेश नहीं अतः निर्भार हूं

मैं ज्ञानघन हूं, मेरे स्वरूपमें अपूर्णता नहीं, अतः कृतार्थ हूं

मैं सहज आनंदमय हूं, मेरे स्वरूपमें कष्ट नहीं अतः स्वयंतृप्त हूं

ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शुद्धं चिदस्मि

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

परमात्म-आरती

(पू० श्री मनोहर जी वर्णी द्वारा रचित)

ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारी, स्वामी जय जय अविकारी ।
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी ॥ टेक ॥ ॐ ...
काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी ।
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेशहारी ॥ १ ॥ ॐ....
हे स्वभावमय जिन तुमि चीना, भव सन्तति टारी ।
तुव भूलत भव भटकत, सहत विपति भारी ॥ २ ॥ ॐ ....
परसम्बंध बंध दुख कारण, करत अहित भारी ।
परमब्रह्म का दर्शन, चहुं गति दुखहारी ॥ ३ ॥ ॐ...
ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन संचारी ।
निर्विकल्प शिवनायक, शुचिगुण भण्डारी ॥ ४ ॥ ॐ ....
बसो बसो हे सहज ज्ञानघन, सहज शांतिचारी ।
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी ॥ ५ ॥ ॐ ...

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आत्म-कीर्तन

हूं स्वतंत्र निश्चल निष्काम । ज्ञाता द्रष्टा आतम राम ।। टेक ।।

[१]

मैं वह हूं जो हैं भगवान, जो मैं हूं वह हैं भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ रागवितान ।।

[२]

मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ।
किन्तु आशवश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ।।

[३]

सुख-दुख दाता कोइ न आन, मोह राग रुष दुखकी खान ।
निजको निज परको पर जान फिर दुखका नहिं लेश निदान ।।

[४]

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्यागि पहुंचूं निज धाम, आकुलताका फिर क्या काम ।।

[५]

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जगका करता क्या काम ।
दूर हटो परकृत परिणाम, "सहजानन्द" रहूं अभिराम ।।

मुद्रक—सहजानन्द शास्त्रमाला, रणजीतपुरी, सदर मेरठ

Version 1